VOLUME- 1I ISSU -1I 16 March 2026

Dikshaurjit International Interdisciplinary Online Research Journal, Latur (DIIRJL)

Add.:Khadgaon Rd,Sambhaji Nagar,Near Smt.SushiladeviDeshmukh Senior College, LaturLatur, Maharashtra 413512, India.

Phone:9890408998, 8329647660Email ID: diirjournal@gmail.comWebsite:https://www.diirjournal.com

प्रा. ज्योती विनायक मोरे

कुमारस्वामी वरिष्ठ महाविद्यालय, औसा

# मीराबाई का प्रेम-विरह : एक साहित्यिक अध्ययन

## १. सारांश

भक्ति आंदोलन के काल में अनेक संत-कवियों ने अपने काव्य के माध्यम से ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति की भावना व्यक्त की। उनमें ग्ल्द्रड्डडड्ड्त का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। मीराबाई के काव्य में श्रीकृष्ण के प्रति गहन प्रेम, समर्पण और विरह की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनके पदों में प्रेम और विरह का अद्भुत समन्वय मिलता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में मीराबाई के काव्य में व्यक्त प्रेम-विरह की भावना का अध्ययन किया गया है।

## २. प्रस्तावना

भक्ति आंदोलन भारतीय साहित्य और संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। इस काल में अनेक संत-कवियों ने ईश्वर भक्ति को सरल भाषा में प्रस्तुत किया। मीराबाई उसी परंपरा की एक प्रमुख संत-कवयित्री थीं। मीराबाई का जीवन पूर्ण रूप से ग़्ब्द्धत्झ्ण्दड्ड के प्रति समर्पित था। उन्होंने अपने काव्य में भगवान कृष्ण को अपना प्रियतम माना और उनके प्रति गहरा प्रेम व्यक्त किया। जब उन्हें कृष्ण के दर्शन नहीं होते, तब उनके काव्य में विरह की वेदना दिखाई देती है। यही प्रेम और विरह उनकी कविता की मुख्य विशेषता है।

## ३. शोध के उद्देश्य

इस शोध के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

मीराबाई के काव्य में प्रेम की भावना का अध्ययन करना।

मीराबाई के पदों में व्यक्त विरह भावना को समझना।

भक्ति साहित्य में मीराबाई के योगदान का अध्ययन करना।

## ४. मीराबाई का जीवन परिचय

का जन्म लगभग १४९८ ई. में राजस्थान के मेड़ता में हुआ था। बचपन से ही उनका झुकाव भगवान कृष्ण की भक्ति की ओर था। उन्होंने सांसारिक जीवन की अपेक्षा भक्ति मार्ग को अपनाया। मीराबाई ने अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना किया, परंतु उन्होंने कृष्ण भक्ति को कभी नहीं छोड़ा। उनके काव्य में यही समर्पण और प्रेम दिखाई देता है।

## ५. मीराबाई के काव्य में प्रेम भावना

मीराबाई के काव्य में प्रेम की भावना अत्यंत गहरी है। उन्होंने कृष्ण को अपना पति और प्रियतम माना। उनके अनेक पदों में यह प्रेम स्पष्ट दिखाई देता है।

उदाहरण के रूप में उनका प्रसिद्ध पद

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।

इस पद में मीराबाई का कृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण दिखाई देता है।

## ६. मीराबाई के काव्य में विरह भावना

मीराबाई के काव्य में प्रेम के साथ-साथ विरह की भावना भी दिखाई देती है। जब उन्हें कृष्ण के दर्शन नहीं होते, तब वे अत्यंत दुखी हो जाती हैं।

उनके पदों में विरह की पीड़ा, प्रतीक्षा और मिलन की आकांक्षा व्यक्त होती है। यही विरह भावना उनके काव्य को अत्यंत मार्मिक और भावपूर्ण बनाती है।

## ७. मीराबाई के काव्य की विशेषताएँ

मीराबाई के काव्य की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

कृष्ण के प्रति गहरा प्रेम और भक्ति
विरह की मार्मिक अभिव्यक्ति
सरल और भावपूर्ण भाषा
भक्ति और आध्यात्मिकता का समन्वय

## ८. निष्कर्ष

मीराबाई का काव्य प्रेम और भक्ति का अद्भुत उदाहरण है। उनके पदों में कृष्ण के प्रति गहरा प्रेम, समर्पण और विरह की भावना दिखाई देती है। मीराबाई ने अपने काव्य के माध्यम से भक्ति आंदोलन को समृद्ध किया और हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसलिए मीराबाई का काव्य आज भी लोगों को प्रेरित करता है।

## ९. संदर्भ

१.हिंदी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचंद्र शुक्ल
२.भक्तिकालीन साहित्य के संदर्भ ग्रंथ
३.मीराबाई के पद संग्रह
४.हिंदी साहित्य पर आधारित शोध लेख

Dikshaurjit International Interdisciplinary Research Journal, Maharashtra Latur
diirjournal@gmail.com